P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

हिन्दी काव्य और महादेवी वर्मा

सुन्ता गुप्ता
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
अवधेश प्रताप सिंह
विश्वविद्यालय,रीवा,
मध्य प्रदेश, भारत

कल्पना तिवारी
प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
शासकीय संस्कृत बेंकट
कॉलेज, विदिशा
रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

राम लल्ला शर्मा
प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
स्व. शा. संजय गाँधी
महाविद्यालय सीधी,
विश्वविद्यालय, रीवा,
मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

हिन्दी साहित्य की रचनाओं में "काव्य" रचना का महत्वपूर्ण स्थान है। जिस प्रकार जलेबी का नाम लेते ही मुँह में पानी आ जाता है या इमली का नाम लेते भी मुँह में पानी आता है, लेकिन दोनो एक दूसरे से भिन्न है। जलेबी का नाम लेने से मुँह में मीठापन आता है और इमली का नाम लेने से मुँह में खट्टापन आता है, ठीक उसी प्रकार काव्य का नाम लेते ही ह्रदय आनंदित हो ऊठता हैं क्योंकि काव्य गीत या संगीतमय है, क्यो कि संगीत हम मानव जाति के लिए बहुत ही आवश्यक हैं, चार वेद में एक वेद सामवेद हमें यह भान कराती है। "काव्य" जगत में महादेवी और युवा कवि एवं कवियित्रीयों ने अपनी लेखनी से जो वर्णन किए हैं, वे अत्यन्त सजीव आनंद दायक तथा प्रेरणादायक एवं शिक्षाप्रद है । हिन्दी काव्य या पद्द साहित्य का इतिहास लगभग 800 साल पुराना है। इसका प्रारंभ तेहरवी शताब्दी से समझा जाता है। हर भाषा की तरह हिन्दी कविता भी पहले इतिवृतात्मक थी, यानी किसी कहानी को लय के साथ छंद में बाधकर अलंकारो से सजाकर प्रस्तुत किया जाता था।

हिन्दी के प्रथम कवि "स्वयंभू" को स्वीकार किया जाता है जिनकी रचना पऊम चरिऊ है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार चन्द्रवरदाई द्वारा रचित पृथ्वीराज रासो हिन्दी का प्रथम महाकाव्य माना जाता है।

हिन्दी के समृद्ध इतिहास में महादेवी वर्मा एक ऐसी अप्रतिम ज्योतिपुन्ज है, जिनकी कीर्ति युगो–युगो तक अक्षुण्ण बनी रहेगी और भावी पीढ़िया उनसे प्रेरणा ग्रहण करती रहेंगी।

भारत के साहित्य मे महादेवी वर्मा का नाम ध्रुवतारे की भातिं प्रकाशमान है। गत शताब्दी की सबसे अधिक लोकप्रिय महिला साहित्यकार के रुप मे जीवन भर पूजनीय बनी रही और रहेगी, सन् 2007 आपकी जन्म शताब्दी के रुप मे मनाया गया और आगे भी मनाया जायेगा, महादेवी वर्मा ने अपने काव्य कृतियों द्वारा पाठको के मन को मोह लिया है एवं शोषित तथा निम्न वर्गीय लोगों तथा गुलामियों की दशा पर कराह उठती हैं। महादेवी वर्मा को आधुनिक मीरा भी कहा जाता है।

मुख्य शब्द : काव्य और कवियित्री।

प्रस्तावना

काव्य का शाब्दिक अर्थ है "काव्यात्मक रचना या कवि की कृति जो छन्दों की श्रृंखलाओं मे विधिवत बाँधी जाती है" काव्य वह रचना है जिससे चित्त किसी रस या मनोवेग से पूर्ण हो"अर्थात वह कला जिसमे चुने हुए शब्दों के द्वारा कल्पना और मनोवेगों पर प्रभाव डाला जाता है। "किसी लयबद्ध और छंदबद्ध रचना को काव्य कहते है"

काव्य अथवा कविता या पद्द साहित्य की वह विधा है जिसमें किसी कहानी या मनोभाव को कलात्मक रुप से किसी भाषा के द्वारा अभियुक्त किया जाता है, भारत में कविता का इतिहास और कविता का दर्शन बहुत पुराना है। इसका प्रारंभ भरत मूनि से समझा जा सकता है। काव्य या कविता का शाब्दिक अर्थ है काव्यात्मक रचना या कवि की कृति जो छंदो की श्रृंखलाओं मे विधिवत बाधी जाती है । काव्य वह वाक्य रचना है, जिससे चित किसी रस या मनोवेग से पूर्ण हो अर्थात वह कला जिसमे चुने हुए शब्दों के द्वारा कल्पना और मनोवेग पर प्रभाव डाला जाता है।

"रस गंगाधर मे रमणीय अर्थ के प्रतिपादक शब्द को काव्य कहा गया है। अर्थ की रमणीयता के अन्तर्गत शब्द की रमणीयता (शब्दालंकार) भी समझकर लोग इस लक्षण को स्वीकार करते हैं, पर अर्थ की रमणीयता कई प्रकार की हो सकती है।

साहित्य दर्पणाकार विश्वनाथ का लक्षण ही सबसे ठीक माना गया है, उनके अनुसार "रसात्मक वाक्य ही काव्य है।'' अर्थात मनोवेगो का सुखद संचार ही काव्य ही आत्मा है।

काव्य रसात्मक वाक्य है जिसे पढ़कर व सुनकर मन आनंदित हो जाता है, काव्य गीत का ही एक रुप है, जिस प्रकार गीत गुनगुनाने से मन आनंदित हो जाता है, उसी प्रकार काव्य को पढ़ाने या सुनने से भी मन आनंदित हो जाता है।

काव्य के तीन प्रकार होते हैः–

1. महाकाव्य
2. खण्डकाव्य
3. चंपूकाव्य

हिन्दी साहित्य की रचनाओं मे काव्य साहित्य का गद्य साहित्य की अपेक्षा सर्वोच्च स्थान है। अन्य विधाओं को पढ़कर या सुनकर उतना आनंद एवं रोमांस नही प्राप्त होता है जितना काव्य विद्या को पढ़कर या सुनकर प्राप्त होता है। हिन्दी साहित्य के आदि काल से लेकर आज तक काव्य विधा पर अनेक कविताएं लिखी गयी है और लिखी जा रही है तथा लिखी जायेंगी।

आदिकाल

हिन्दी काव्य का प्रारंभ आदि काल या वीरगाथा काल से माना जाता है आदिकाल के कवियों में तीन प्रमुख प्रवित्तियां मिलती है धार्मिकता, वीरगाथात्मकता व श्रृंगारिकता आदि। इस काल मे डिंगल व पिंगल भाषा का प्रयोग किया गया। इस काल के प्रमुख कवि विद्यापती, अमीर खुसरो,सरहपा,सबरपा चनद्रवरदायी एवं जगनिक हैं। इनकी काव्यकृति हिन्दी साहित्य में लोकप्रिय हैं, इस काल मे नारी मे भी वीरता की भावना परिलक्षित होते है।

"भल्ला हुआ जो मारिया, बहिणी म्हाकतु।
लज्जेजंतु वयस्यहू जई भग्गा घरू ऐतु।

–हेमचन्द

भक्तिकाल

भक्तिकाल को तो हिन्दी साहित्य का स्वर्ण काल कहा जाता है, वास्तव में जो कहावत है कि भक्ति मे शक्ति है सत्य साबित हुआ है। इस काल में संत काव्य और प्रेमाख्यानक काव्य लिखा गया है । इस काल के प्रमुख कवि सूरदास तुलसीदास, जायसी, कबीरदास, उसमान, मीराबाई है। तुलसीदास जी कीरचना रामचरितमानस तथा उनकी अन्य रचनाएं बहुत प्रसिद्ध है। उसी प्रकार सूरदास जी की "सूरसागर" कबीरदास जी की "बीजक" बहुत प्रसिद्ध रचनाएं हैं।

इनकी रचनाएं भारत में ही नही वरन पूरे विश्व मे प्रसिद्ध हैं। रीति काल को श्रृंगार काल भी कहा जाता है, इस काल के कविता में आम आदमी के हर्ष एवं दुख से जुड़ने के बजाय राजा एवं राजदरबारों के वैभव और विलास से जुड़ गई। इस काल के प्रमुख कवि बिहारीलाल, केशवदास देव, घनानंद, बोधा आलम आदि है। बिहारीलाल की रचना बिहारी सरसई है जिससे लगभग 700 दोहे हैं बिहारी के दोहे का भाव गागर मे सागर भरने जैसे है।

आधुनिक काल

आधुनिक काल के कवियों ने खड़ी बोली एवं ब्रजभाषा का प्रयोग किए है, ये सरल शब्दों का प्रयोग किए हैं इस काल को कई भागों मे बॉटा गया है। इस काल के प्रमुख कवि भारतेन्दू, हरिश्चन्द्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, सुमित्रानंदन पन्त, जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, शमशेर बहादुर, गजानन माधव मुक्तिबोध, नागार्जुन, हरिवंशराय बच्चन आदि हैं।

इस काल के छायावाद युग में अन्य कवियों के साथ ही इस युग के चार प्रमुख स्तम्भ हैं। सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पन्त और महादेवी वर्मा। छायावाद को हिन्दी साहित्य के भक्तिकाव्य के बाद दूसरा स्थान दिया जाता है ।

छायावादी काव्य मे प्रसाद ने यदि प्रकृति को मिलाया निराला ने मुक्तक छंद दिया पन्त ने शब्दों को खराद पर चढ़ाकर सुडौल और सरस बनाया तो महादेवी ने उसमे प्राण डाले। इससे यह स्पष्ट होता है कि प्रसाद जी ने यदि पंचत्तव बना, निराला ने मानव का सॉचा गढ़े, पंत ने शरीर की हड्डी बनाई तो महादेवी जी ने उसमे प्राण त्तव (आत्मा) प्रवेश कराई जिससे इस युग की रचनाओं मे जीवतंता एवं सजीवता आयी।

महादेवी की कविताओं मे आत्माभिव्यक्ति आत्म विस्तार, प्रकृति प्रेम,नारी जीवन, एवं उसकी मुक्ति का स्वर, अज्ञात व असीम के प्रति जिज्ञासा, सांस्कृतिक चेतना व सामाजिक चेतना, मानवता वाद एवं स्वच्छंद कल्पना का नवोत्मेष आदि अपने काव्य का विषय बनायी।

आप हिन्दी की सर्वाधिक प्रतिभावान कवियित्रियों में से एक थी और स्वतंत्रता सेनानी भी सामाजिक कुरतियों एवं रुढ़ियों को जड़ से उखाड़ फेकने के लिए आपकी भूमिका चिरकाल तक स्मरणीय रहेगी । स्वतंत्रता आंदोलन में भी आप बराबर सक्रिय रहीं।

आपकी रचनाओं का साहित्यिक सौन्दर्य तथा युगांतरकारी आकर्षण आपको सही अर्थो में आधुनिक युग की मीरा बना देता है, काव्य शिरोमणि निराला ने आपकी साहित्यिक उत्कृष्टता को हिन्दी के विशाल मंदिर की सरस्वती कहकर सम्बोधित किया था।

हिन्दी काव्य जगत मे महादेवी जी की काव्य रचना सर्वोच्च स्थान पर विराजित है। महादेवी ने स्वतंत्रता के पहले तथा बाद का भी भारत देखा । वे उन कवियीत्रियों में से एक हैं जिन्होनें व्यापक समाज मे काम करते हुए भारत के भीतर विद्यमान हाहाकार रुद्रन को देखी–परखी और करुण होकर अंधकार को दूर करने वाली दृष्टि देने की कोशिश की।

महादेवी की काव्य रचना ही नही बल्कि उनकी समाज सुधार के कार्य और महिलाओं के प्रति चेतन भावना भी इस दृष्टि से प्रभावित रहे। उन्होने मन की पीड़ा को स्नेह और श्रृंगार से सजायी है। भारत के साहित्य आकाश मे आप का नाम ध्रुव तारे की भांति प्रकाशमान है गत शताब्दी की सबसे अधिक लोकप्रिय महिला साहित्यकार के रुप मे जीवन भर पूजनीय बनी रही, और रहेगी । सन् 2007 आपकी जन्म शताब्दी के रुप मे मनाई गयी और मनाई जायेगी। आपकी काव्य रचना का सूक्ष्म विवरण इस प्रकार हैः–

नीहार

नीहार आपकी पहली गीत काव्य संग्रह है इस संग्रह से 1924 से 1928 तक के रचित गीत संग्रहित है। नीहार के विषयवस्तु के सम्बन्ध में स्वयं आपका कथन उल्लेखनीय है।

नीहार के रचना काल मे मेरी अनुभूतियों में वैसी ही कौतूहल मिश्रित वेदना उमड़ आती थी, जैसे बालक के मन मे दूर दिखाई देने वाली अप्राप्त सुनहली उषा और स्पर्श से दूर सजल मेघ के प्रथम दर्शन से उत्पन्न हो जाती है । इन गीतो मे कौतूहल मिश्रित वेदना की स्वभाविक अभिव्यक्ति हुई है। इस संग्रह मे आपकी रचना निम्न हैः–

वे मुस्काते फूल नही जिनको आता है मुरझाना
वे तारो के द्वीप नही जिनको आता है बुझजाना
वे सूने से नयन नही जिनमे बनते आसू मोती
क्या अमरो का लोक मिलेगा तेरी करुणा की उपहार
रहने दो हे देव मेरा यह मिटने का अधिकार

रश्मि

रश्मि आपकी दूसरी कविता संग्रह है इसमें 1927 से 1931 तक की रचनाएं हैं इसमें आपकी चिंतन और दर्शन पक्ष मुखर होता प्रतीत होता है।

अतः अनुभूति की अपेक्षा दार्शनिक चिंतन और विवेचन की अधिकता है इस काव्य रचना मे आपकी चिंतन के स्वर मुखरित होते है।

चुभते ही तेरा अरुण बान
बहते कन कन से फूट फूट
मधु के निर्झर से सजल गान
रंग रहा हृदय ले अश्रु ह्यास
यह चतुर चितेरा सुधि विहान

नीरजा

नीरजा में रश्मि का चितंन और दर्शन अधिक स्पष्ट और प्रौढ़ होता है, कवयित्री सुख–सुख मे समन्वयं स्थापित करती हुई पीड़ा एवं वेदना मे आनंद की अनुभूति करती है, वह उस सामजस्य पूर्ण भाव भूमि मे पहुँच गई है। जहां दुख सुख एकाकार हो जाते है और वेदना का मधुर रस ही उसकी समरसता का आधार बन जाता है, सांध्यगीत मे यह सामजस्य भावना और भी परिपक्च और निर्मल बनकर साधिका को प्रिय के इतना निकट पहुँचा देती है कि वह अपने और प्रिय के बीच की दूरी को ही मिलन समझने लगती है।

मधुर–मधुर मेरे दीपक जल
युग–युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल
पुलक–पुलक मेरे दीपक जल
सारे शीतल कोमल नूतन
मानो रहे तुझसे ज्वाला कण
मंदिर–मंदिर मेरे दीपक जल
प्रियतम का पथ आलोकित कर

सांध्यगीत

सांध्यगीत में 1934 से 1936 ई तक के रचित गीत है। इन गीतो में नीरजा के भावो का परिपक्च रचना मिलता है यहां न केवल सुख–दुख की बल्कि ऑसू और वेदना मिलन और विरह आशा और निराशा एवं बंधन मुक्तिआदि का समन्वय है। निम्न गीत प्रस्तुत हैः–

प्रिय सांध्यगीत गगन
मेरा जीवन
यह क्षितिज बना धुंधला विराग
नव अरुण–अरुण मेरा सुहाग
छाया सी काया वीतराग
सुधिनिने स्वप्न रंगीले धन
घर आज चले सुख–दुख विहग
तुम पोंछ रहा मेरा अग–जग
छिप आप चला वह चित्रित मग
उतरो अब पलकों मे पाटुन।

दीपशिखा

दीपशिखा मे 1936 से 1942 ई0 तक के गीत हैं इस संग्रह के गीतो का मुख्य प्रतिपाद्य स्वयं मिटकर दुसरे को सुखी बनाना है। यह महादेवी की सिद्धावस्था का काव्य है, जिसमे साधिका की आत्मा की दीपशिख अंकपित और अचंचल होकर आराध्य की अखण्ड ज्योति मे विलीन हो गई है। इसमे वर्मा के गीतों का अधिकाधिक विषय प्रेम है। यह प्रेम की सायंकता उन्होने मिलन के उल्लासपूर्ण क्षणों से अधिक विरह की पीड़ा मे तलाश की है।

अग्नि रेखा

अग्निरेखा मे महादेवी की अन्तिम दिनो मे रची गई रचनाए संग्रहीत है जो पाठकों को अभिभूत भी करेगी, और आश्चर्य चकित भी इस अर्थ में कि महादेवी काव्य मे ओत–प्रोत वेदना और काव्य का वह स्वर जो कब से उनकी पहचान बन चुका है। अग्निरेखा मे दीपक को प्रतीक मानकर अनेक रचनाएं लिखी गयी है, साथ ही अनेक विषयों पर भी कविताएं है।

सप्तपर्णा

सप्तपर्णा में महादेवी ने अपनी सांस्कृतिक चेतना के सहारे वेद, रामायण,वीर गाथा,अश्व घोष कालिदास श्रवभूति एवं जयदेव की कृर्तियो से तादात्मय स्थापित करके 39 चयनित महत्वपूर्ण अंशो का हिन्दी काव्यानुवाद इसमे प्रस्तुत किया है। आरंभ मे 61 पृष्ठीय अपनी बात में उन्होनें भारतीय मनीषा और साहित्य की इस अमूल्य धरोहर के सम्बन्ध मे गहन शोधपूर्ण विमर्श भी प्रस्तुत किया है। सप्तपर्णा के अन्तर्गत आर्षावाणी वाल्मिकी,थेरगाथा अश्वघोष कालिदास और भवभूति के बाद सातवें सोपान पर महादेवी वर्मा ने जयदेव को प्रतिष्ठित किया है। उन्होने बताया है कि जयदेव 12वीं सदीं के पूर्वाक का जब अर्विभाव हुआ तब संस्कृत के श्रृंगारी काव्य के नायक–नायिका के रुप मे राधाकृष्ण जी प्रतिष्ठ हो चुके थे, महादेवी जी ने सप्तपर्णा मे संस्कृत और पाली साहित्य के चयनित अंशो का काव्यानुवाद प्रस्तुत करते समय अपनी दृष्टि भारतीय चिंतन धारा और सौदर्य बोध की परम्परा के इतिहास पर केन्द्रित रखी है। उनकी वह कृति उन्हें एक सफल सृजनात्मक काव्यानुवादक, साहित्येतिहासकार तथा इसमे संदेह नहीं कि संस्कृत चिंतन रचना में प्रतिष्ठित करने में पूर्ण समर्थ है ।

अध्ययन का उद्देश्य

सभी भाषा से प्यारा एवं न्यारा भाषा हिन्दी है । हिन्दी भाषा हिन्दी के दो बिधा है, प्रथम गद्य बिद्या तथा, द्वितीय पद्य बिद्या। गद्य बिद्या अध्यन करने पर उतना आनन्द प्राप्त नहीं होता है, जितना पद्य बिद्या पढ़ने से प्राप्त होता है । पद्य बिद्या या पदयांश पढ़कर उसके लय, ताल, छन्द रोम–रोम एवं अंग–अंग पुल्कित हो जाता है । हमारी भाषा ही ऐसा भाषा है,कवि सम्मेलन से मीनार

जिला एवं राज्य स्तर से लेकर देश से विदेश(राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय) स्तर पर होता है । अंग्रेजी भाषा को ये ख्याति एवं सम्मान प्राप्त नहीं है । हिन्दी भाषा हिन्दी काव्य सीखने एवं पढ़ने के लिए अनगिनत विदेशी भारत मे आते रहते ।

स्वयं(सुंता) के शब्दो मे

''अंग्रेजी बोलत पढ़त जीहवा थकी गए,
लिखत थकी गए हसत ।
जब तक हिन्दी काव्य लिखत पढ़त नाही,
तन दृ मन ना हो मदमस्त ।
तो जीवन समझो व्यर्थ,
जीवन का हो यदि अर्थ
तो तन– मन हो मदमस्त ''

काव्य (कविता) के माध्यम से मनोरंजन दीन–दीन का शहायता करने का आदेश शिक्षा का स्तर सुधारने मुख्य रूप से नसे एवं पिछड़े लोग की शिक्षा का स्तर बढ़ाना एवं समाज सेवा है ।

मुख्य रूप से अध्ययन एवं काव्य सृजन सभी जीवन के मंगल एवं कल्याण से है । मनोरंजन पूर्ण ज्ञान का विकास करना एवं जीवन का अर्थ समझना काव्य का प्रमुख उद्देश्य है ।

निष्कर्ष

महादेवी जी की काव्य साहित्य भारत की नही वरन् विश्व साहित्य निधी है। नीहार जीवन के उषाकाल की ही रचना है, जिसमें सत्य कुहाजाल में छिपा रहकर भी मोहक और कौतूहलपूर्ण प्रतीत होती है। रश्मि युवावस्था के प्रारंभिक दिनो की रचना है, जब सत्य किरणें आत्मा मे ज्ञान की ज्वाला जगा देती है । नीरजा आपकी प्रौढ़ मानसिक स्थिति की कृति है। जिसमें दिन के उज्जवल प्रकाश मे कमलिनी की तरह वह अपने साधना मार्ग पर अपना सौरभ बिखरा देती है। सांध्यगीत मे जीवन की संध्याकाल की करुणार्द्रता और वैराग्य भावना के साथ–साथ आत्मा को अपने आध्यात्मिक घर को लौट चलने की प्रवृत्ति विद्यमान है। दीपशिखा मे रात के शांत स्निग्ध और शून्य वातावरण मे आरोग्य के सम्मूख जीवन दीप के जलते रहने की भावना प्रमुख है। इस प्रकार अपने जीवन साधना का मर्म, करुणा, वेदना प्रेम एवं प्रकृति चित्रण को स्पष्ट कर ही है।

सन्दर्भ ग्रन्ध सूची

भारतकोश
आचार्य विश्वनाथ, साहित्य दर्पणाकार।
हेमचन्द्र
वर्मा महादेवी, नीहार, 1929, साहित्य भवन लिमिटेड
वर्मा महादेवी, रश्मि, 1932, साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयाग 147
वर्मा महादेवी, नीरजा, मार्च 04, 2004 लोकभारती प्रकाशन 110
वर्मा महादेवी, सांध्यगीत, 1935, लोकभारती प्रकाशन 80
वर्मा धीरेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास।
वर्मा महादेवी, रश्मि, 1932, साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयाग 147
शुक्ल रामचन्द्र (हिन्दी साहित्य का इतिहास)
वर्मा महादेवी, सप्तवर्णा, जनवरी 01, 2008 लोकभारती प्रकाशन 212
वर्मा महादेवी, यामा, जनवरी 01, 2008 लोकभारती प्रकाशन 105
वर्मा महादेवी, आत्मिका, 1983, राजपाल एंड सन्ज 104
वर्मा महादेवी, हिमालय, लोकभारती प्रकाशन 194